जैसी करनी वैसी भरनी, गीता का है ज्ञान।
फल मिलता हमको कर्मों का, करना इसका ध्यान।।

बोया कीकर का तरु जब है, कैसे पाएँ आम।
जीवन में जो सुख दुख आते, कर्मों का परिणाम।।

जैसे संस्कारों को पाया, वैसा करते काज।
विषधर बन जो फन फैलाए, गिरती उनपर गाज।।

खाई में वे ही गिरते हैं, जो खोदे हैं कूप।
करना ऐसे कर्मों को सब, जग में बनते भूप।।

समझे पीड़ा सबकी जो हैं, पाते सबका प्यार।
अच्छाई जो करते रहते, सपने हैं साकार।।

पढ़ते पुस्तक में उदाहरण, दुर्जन का हो नाश।
क्यों करते निंदित कामों को, सुधरे मानव काश।।

अधकचरा जब ज्ञान हो, कैसे हो उपचार।
होते झोला छाप हैं, जाना मत उस द्वार।।

दसवीं में वे फ़ेल हैं, चाहे हैं आराम।
चोखा-धंधा यह लगे, बिन पैसे हो नाम।।

मामूली सा दर्द हैं, फैलाते हैं भ्रम।
अनुभव उनका शून्य है, चलता रहता क्रम।।

जाना जिसने सत्य है, रहता इनसे दूर।
चक्कर में जो भी फँसे, सेहत उसकी चूर।।

फैले गली-गली हुए, ऐसे कितने लोग।
आता-जाता कुछ नहीं, बिगड़े सब हैं रोग।।

बुद्धिमानी से काम लें, चुनना विज्ञान-राह।
जोड़-तोड़ वे सब करें , होता सब कुछ दाह।।

जीवन अति अनमोल है, रखना इसका ध्यान।
कुछ पैसे के मोह में, खतरे में हो जान।।

अर्चना कोहली

गौरवशाली है निज संस्कृति, गढ़ती थी संस्कार।
पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है, अनुपम है उपहार।।

निर्झरिणी बहे संस्कार की, यही हिंद पहचान।
जिससे होते सदा परिष्कृत, सदा गुणों की खान।।

आत्मा यही आर्यावर्त की, होती जीवन सार।
गाथा यह शाश्वत मूल्यों की, फैली चहुँदिश डार।।

गीता रामायण सब इसमें, बिखरी है वह आज।
मर्यादा पर लगा प्रश्न है, जिस पर पहले नाज।।

नैतिकता के सतत क्षरण से, होते हैं संग्राम।
सीता-पांचाली निमित्त हैं, ज्ञात युद्ध परिणाम।।

लिया जन्म जिसके आँचल में, करती वह चीत्कार।
हुआ मर्म पर अब प्रहार है, भूले शिष्टाचार।।

मानवता रक्षित है इसमें, दया-अहिंसा मूल।
औंधी पड़ी अब संस्कृति है, देखे चुभते शूल।।

करनी मिलकर रक्षा सबको, भरने सुंदर रंग।
करें वहन मिल भारतवासी, रहे संस्कृति संग।।

 ISSN:2583-8849